रात्रि क्लास 10-8-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

आये बहुत, प्रभावित हुये। समझा कुछ भी नहीं। यह भी वन्डर है ना। ज्ञान बिल्कुल सहज भी है। परन्तु पत्थर बुधि से पारस बुधिनना है कठिन। है भी गीता का एपीसुड। गीता के एपीसुड को संगमयुग ही कहते हैं। गीता है पहले नम्बर का शास्त्र। जैसे ब्राहमण पहले नम्बर में है जो गीता का सच्चा ज्ञान सुनते हैं। गीता में भगवानुवाच है भी राईट। परन्तु भगवान कह दिया है मनुष्य को। सूक्ष्मवतन वालों को भी देवता कहते हैं। इन्हों को भी देवता कहते हैं। बाप ने समझाया है ब्रहमा विष्णु शंकर यह सभी है सा0। शंकर का पार्ट है नहीं। बाकी रहा ब्रहमा। और विष्णु। विष्णु तो है ही सतयुग के लिए। सूक्ष्मवतन के लिए नहीं। जेवर आद पहने हुये हैं। तो गीता का एपीसुड है। परन्तु जब शिव भगवानुवाच समझे तब ठीक है। नई दुनिया की स्थापना करने वाला ही विश्व का मालिक बनाते हैं। बनते कैसे हैं? संगम पर। बनते बहुत हैं परन्तु फिर झट भूल जाते हैं। तुम कह भी सकते हो परन्तु वह है कौरव सम्प्रदाय।, पाण्डव सम्प्रदाय? अभी पाण्डव सम्प्रदाय को मत देने वाला कौन? साक्षात स्वयं परमपिता परमात्मा। कौरवों को श्रीमत देने वाला चाहिए वह फिर है रावण। जिसका विनाश होता है। बातें बहुत सहज है समझने की। दुःख भी अनेकानेक है। इस समय अथाह दुःख है। सुख भी अथाह मिलता है। बाप को संगम पर ही आना पड़े सुख का वरसा देने। कलियुग को भी पुरुषोत्तम नहीं कहा जाता। सतयुग और कलियुग के बीच का संगम है पुरुषोत्तम संगम युग। समझाते तो बहुत अच्छा हैं फिर भी भूल जाते हैं। सात रोज कोई कोर्स ले तो प्रजा में अच्छा पद पावेंगे। बाकी ठहर जाये, मुश्किल है। सारा दिन तो कोई दे भी न सके। यह भी समझते हैं पाण्डवों की विजय हुई थी जिस तरफ साक्षात स्वयं परमपिता परमात्मा। तुमको श्रीमत देने वाला वह है ना। तो उनको कितनी याद करनी चाहिए। अन्दर में। जो महिमा तुम जानते हो वह कोई नहीं जानते। कौरव निन्दा करते हैं पाण्डव महिमा करते हैं। कौरव है विप्रीत बुधि। वह है दुश्मन। वह मित्र वह दुश्मन। वह विप्रीत बुधि यह प्रीत बुधि। यही समय है जिसमें पढ़ना होता है। राजयोग की शिक्षा लेनी है। इस तरफ फिक्र अथाह है। कौरव गवर्मेन्ट को कितना फिक्र है। कितनी समस्यायें आती हैं। आज यह हुआ, आज अनाज न मिला। फिक्र से परेशान ... उनको समझा सकते हैं ना। अभी तो गवर्मेन्ट को कितना फिक्र है। यहां ऐसे गवर्मेन्ट स्थापन करते हैं। कौन स्थापन करते हैं। क्या कहें। पाण्डव कहें वा ब्राहमण कहें। असल जैसे पत्थर ठिक्कर बुधि। पढ़े हुये बहुत हैं। वहां बुधि में आता रहता है। अभी दुःख खत्म होना है। हाहाकार बाद फिर जयजयकार होगी। तुम डरो मत। कौरव आद कहने से गवर्मेन्ट बिगड़ेगा नहीं। यह तो गीता के अक्षर हैं। कौरव पाण्डव क्या करत भये। एक भी मनुष्य नहीं जो कहे इन्हों ने यह पद कैसे पाया है। सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। इन्हों ने कब पुरुषार्थ किया तो कृष्ण बना। किसने पुरुषार्थ कराया जो विश्व का प्रिन्स बन गया। राधे और लक्ष्मी एक ही है। कृष्ण और ना0 एक ही हैं। यह भी किसको पता नहीं है। आगे चल कर तुम्हारी बुह महिमा निकलेगी। बन्देमातरम हो ना। बन्दे मातरम है तो बन्देपितरम भी जरूर चाहिए। पवित्र गृहस्थधर्म में तो दोनो ही चाहिए। सिर्फ तुम्हारा गायन है कलश माताओं को दिया। असुर भी अमृत पी आये। असुर उनको कहा जाता है जो अमृत पी फिर विकार के लिए दुःख देते हैं। असुर जो भस्म हो पड़े हैं काम अग्नि में। उनको कहा जाता है भस्मासुर। गीता एपीसुड को भी गीता का संगम कहा जाता है। सतयुग में तो कोई भी स्थापना होती नहीं। स्थापना होती है पुरुषोत्तम संगम युग पर। समाचार तब लिखना चाहिए जब अच्छी रीत समझकर मददगार बने। बहुतों का कल्याण करने लग पड़े। जो कल्याण ही नहीं करते उनका नाम सुनने से क्या फायदा। बाप के दिल पर हो नहीं चढ़ सके। जो दिल पर सो तख्त पर। तख्त का मालिक नहीं बनते तो क्या करेंगे। सच्चा बाबा है तो सच्चा बाबा के सच्च बोलना चाहिए ना। झूठ भी कोई मुश्किल छोड़ते हैं। निश्चय बुधि नहीं बनते हैं तो झूठ लगी रहती। दिन प्रति दिन बुधि को पाते रहते हैं। हरेक बात में ऐसे हैं। दृष्टि को भी सुधारेंगे नहीं तो वह बुधि को पाती रहेगी। फेल कर देगी। अच्छा बच्चों को गुडनाईट। नमस्ते।